सेंट एंड्रयूज स्कॉट्स स्कूल

एडजेसेंट नवनीति अपार्टमेंट आई.पी.एक्सटेंशन, पटपडगंज,दिल्ली – ११००९२

सत्र: 2026-27

कक्षा:-6 **विषय: पाठ्य पुस्तक** **पाठ:१२ अतिथि**

बोलकर

(क) हमारे घर आखिरी बार जो अतिथि आए थे वह अभी कुछ ही दिन पहले आए थे। वह हमारे मामा-मामी थे। उनका व्यवहार बहुत ही अच्छा था। वह सुबह आए थे और शाम को चले गए थे। आते समय मिठाई लाए थे और जाते समय हमें भेंट देकर भी गए थे।

(ख) यदि हमें कोई मेहमान बनाकर बुलाए तो हम उनके लिए उनकी पसंद की मिठाई, फल तथा कपड़े ले जाना पसंद करेंगे।

(ग) अगर हम लेखक की जगह होते तो अतिथि से अच्छा व्यवहार करते, क्योंकि आज के समय में अतिथि आते भी बहुत कम हैं। यदि वह आए हैं तो हमारा फर्ज़ है कि हम उनका उचित सम्मान करें, उनकी देखभाल करें, क्योंकि अतिथि हमेशा देवता माना जाता है।

(घ) अतिथि के अचानक आने पर कई बार हमें बहुत खुशी होती है तो कई बार हमें बुरा भी लगता है। खुशी तब होती है जब कोई अतिथि हमारा प्रिय हो और बुरा तब लगता है जब कोई अनचाहा अतिथि आ जाता है।

लिखकर

लघु उत्तरीय प्रश्नों के उत्तर -

(क) लेखक को इस तरह के अतिथि पसंद नहीं हैं जो तिथि की बात तो दूर, 'घड़ी', 'पल', 'पहर' का भी ध्यान न रखते हुए एकदम अयाचित आ धमकते हैं।

(ख) बिना पूर्व सूचना के यदि अतिथि आ जाए तो वह लेखक की दिनचर्या को पूरी तरह बर्बाद कर देते हैं।

(ग) लेखक के घर जब अतिथि आते हैं तो सिर्फ़ यह कहते हुए आते हैं कि मैं थोड़ी देर बैठूँगा, परंतु अतिथि ऐसे जम जाते हैं कि जाने का नाम ही नहीं लेते। वे कई बार तो ऐसे जम जाते हैं, जैसे अंगद का पैर।

(घ) लेखक का मानना है आजकल महँगाई के ज़माने में लोग आपसे भोजन के लिए पूछते हैं तो समझ लीजिए कि वे आपसे कोई ना कोई काम निकलवाना चाहते हैं।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्नों के उत्तर -

(क) लेखक को वह अतिथि पसंद नहीं हैं, जो अयाचित की तरह कभी भी आ आते हैं तथा जो समय लेकर नहीं आते। ऐसे अतिथि के आने से उनका समय बर्बाद होता है और उनके लेखन में बाधा पड़ती है।

(ख) यदि हमारे यहाँ कोई अतिथि बिना बताए बार-बार आने लगे तो निश्चित ही हमें असुविधा का सामना करना पड़ेगा। एक दो बार उसे बर्दाश्त करेंगे, पर यही क्रिया बार-बार वह करता रहा तो फिर उससे क्षमा माँगते हुए बड़े प्यार से कह देंगे कि अगली बार जब आप आएँ तो कृपा करके बताकर आएँ, क्योंकि आपके बताने से हमें बहुत-सी असुविधाओं का सामना करना पड़ता है।

(ग) पहले के समय में अतिथि को देवता समझा जाता था और ज़रूरत पड़ने पर अतिथि के सम्मान में जान तक हाज़िर कर दी जाती थी। लेकिन आज के समय में अतिथि सत्कार की परंपरा पहले जैसी नहीं रह गई है। आज अतिथि को देखकर मुँह बन जाता है। उसके सत्कार से बचने लगते हैं और यह सोचते हैं कि वह कब जाए?

(घ) जिस तरह अंगद ने इतनी दृढ़ता से अपना पैर जमाया था कि उसके पैर को रावण की सभा में से कोई भी हिला नहीं पाया था, उसी तरह आज के अतिथि कहीं जाते हैं, तो वहाँ जम जाते हैं। वह यह नहीं सोचते कि उनके ऐसा करने से मेजबान को कितनी तकलीफ़ों का सामना करना पड़ेगा? अंगद का पैर का अर्थ है- किसी स्थान पर जम जाना।

पठित गद्यांश

(क) लेखक ने अतिथि की आवाज़ की तुलना यमदूत के संदेश से की है क्योंकि लेखक कॉलेज का अध्यापक होने के साथ-साथ लेखन का कार्य भी करता है और अतिथि आकर उसके लिखने के समय को बर्बाद कर डालता है।

(ख) लेखक सवेरे चाय पीकर स्वस्थ मन से लिखने बैठा था।

(ग) अतिथि के आने से लेखक की तन्मयता पर यह प्रभाव पड़ा कि लिखने में जो तन्मयता बढ़ रही थी, वह अचानक भंग हो गई।

(घ) अतिथि ने लेखक को व्यस्त देखकर यह कहा कि आप शायद काम कर रहे थे, मैं थोड़ी ही देर बैठूँगा।

अर्थ ग्रहण संबंधी प्रश्न (बहुवैकल्पिक प्रश्न)

1. **(क)** (ii), **(ख)** (iv), **(ग)** (iv), **(घ)** (ii)
2. **(क)** यमदूत, **(ख)** आरंभ, **(ग)** छुट्टियाँ/फुरसत, **(घ)** अरब/ऊँट
3. **(क)** गलत, **(ख)** सही, **(ग)** सही, **(घ)** सही